संत शिरोमणी गुरू रविदास शासकीय महाविद्यालय–सरगॉव, जिला–मुंगेली(छ.ग.)

सरगांव, दिनॉक–08/03/2021

सरगांव के आस–पास स्थित ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थलों का समय–समय पर कुछ शिक्षक एवं छात्रों के द्वारा भ्रमण किया जाता है, एवं इन विरासतों एव धरोहरों को सुरक्षित रखनें हेतु विभिन्न रचनात्मक कार्य किया जाता है, जिसका विवरण निम्नानुसार हैः–

धूमनाथ मंदिर, सरगांव

यह प्राचीन मंदिर रायपुर–बिलासपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर न्यायधानी बिलासपुर से 30 कि. मी. की दूरी पर मुंगेली जिले में स्थित सरगांव में बस्ती के बीच स्थित है। वास्तव में यह मंदिर भगवान धूमनाथ या धूमेश्वर शिव को समर्पित है जो कलचुरि काल में निर्मित हैं। परावर्ती काल में गर्भगृह में सिन्दूरी पुती हुई मूर्ती स्थापित कर दी गई है तथा धूमेश्वरी देवी नाम से उसकी पूजा होने लगी हैं। यह पूर्वाभिमुख मंदिर है और निर्माण योजना की दृष्टि से पंचरथ मंदिर है। इसके शिखर भाग में कलश एवं आमलक नहीं है। यह मण्डप विहीन मंदिर है। इस मंदिर की बाह्य भित्ति के जंघा भाग में चामुण्डा, नृसिंह, हरि–हर एवं कुछ मिथुन–मूर्तियॉ दिखलाई पड़ती है। यह मंदिर स्थापत्य कला का सुदंर नमूना है।

स्त्रोत– धरोहर
प्रकाशक –संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व
छत्तीसगढ़,रायपुर

चित्र :– धूमनाथ मंदिर

Scanned by CamScanner

मदकू द्वीप

मदकू द्वीप, रायपुर–बिलासपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर न्यायधानी बिलासपुर से 37 कि. मी. की दूरी पर स्थित बैतलपुर से 04 कि. मी. दक्षिण–पूर्व में शिवनाथ नदी के तट पर स्थित हैं।

प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण और विविध औषधीय वनस्पत्तियों कों अपने वक्षस्थल पर संजोयें इस स्थल के नाम के 02 मुख्य आधार हैं। वर्तमान मदकू शब्द वस्तुतः 'माड़ूक्य' अथवा 'मण्डूक' का अपभ्रंश माना जाता है। डॉ. विष्णु सिंह के अनुसार यह कभी माडूक्य ऋषि की तपोस्थली थी और संभवतः यही पर रहकर उन्होंने अपनी कृति 'माण्डूक्योपनिषद' की रचना की थी। द्वितीय– मण्डूक का शाब्दिक अर्थ 'मेंढक' भी होता है। शिवनाथ के जल से परिवृत, इस द्वीप की स्थलाकृति जल में तैरतें हुए मेंढकं जैसी परीलक्षित होती हैं।इसी कारण इसका नाम 'मदकू द्वीप' पड़ा ।

छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिला में स्थित 'मदकू द्वीप' का उत्खनन, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा 2010–11 में, पुरातत्वीय सलाहकार श्री अरूण कुमार शर्मा जी के कुशल मार्गदर्शन और श्री प्रभात कुमार सिंह के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ । इस उत्खनन से मदकू द्वीप के कलचुरि युग के 11वीं से 15वीं ईस्वीं में निर्मित उन्नीस प्रस्तर मंदिरों के भग्नावशेषों के साथ–साथ अनेक प्रस्तर प्रतिमायें और पुरावशेष प्रकाश में आ चुके है। मदकू द्वीप के इतिहास एवं पुरातत्व को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. विष्णु सिंह ठाकुर, पं. कृपाराम जी गौरहा और छत्तीसगढ़ प्रान्त इतिहास संकलन समिति को हैं।

मदकू द्वीप में उत्खनन से प्राप्त उन्नीस मंदिर बलुआ पत्थरों से निर्मित हैं। अध्ययन के सुविधा और प्रत्येक मंदिर का विस्तृत विवरण हेतु इन्हें 1 से 19 तक की संख्याओं के माध्यम से दर्शाया गया है। मंदिर 4, 7, 9, 10, 11 और 19 के गर्भगृह में शिवलिंग/योनिपीठ विराजित है । मंदिर कमांक 1, 2, 3, 5, 12, 13, 15, 16, 17 एवं 18 के गर्भगृह में स्मार्तलिंग विराजमान है। मंदिर कमांक 6 में गर्भगृह में उमा–महेश्वर एवं मंदिर कमांक 8 के गर्भगृह में गरूड़ारूढ़ लक्ष्मीनारायण की मूर्ति विराजित है। मुंगेली जिले के पुरातात्विक स्थलों में मदकू द्वीप का विशेष महत्व हैं।

स्त्रोंत– मदकूद्वीप उत्खनन, प्रभात कुमार सिंह
प्रकाशक –संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व
छत्तीसगढ़,रायपुर

Scanned by CamScanner

चित्रः– मदकू द्वीप स्थित स्मार्तलिंग मंदिर

देवरानी–जेठानी मंदिर, ताला (अमेरीकॉपा), जिला बिलासपुर

प्राचीन काल में दक्षिण कोसल के शरभपुरीय राजाओं के राजत्वकाल में मनियारी नदी के तट पर ताला नामक स्थल पर अमेरीकॉपा गॉव के समीप दो शिव मंदिरों का निर्माण कराया गया था जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानसार हैः–

(क) देवरानी मंदिरः– इन मंदिर में प्रस्तर निर्मित अर्ध्दभग्न देवरानी मंदिर, शिव मंदिर है जिसका मुख पुर्व दिशा की ओर है। इस मंदिर के पीछे की तरफ शिवनाथ की सहायक नदी मनियारी प्रवाहित हो रही है। इस मंदिर का माप बाहर की ओर से 7532 फीट है जिसे भू–विन्यास अनूठा है। इसमें गर्भगृह, अंतराल एवं खुली जगह युक्त संकरा मुखमण्डप हैं। मंदिर में पहुॅच के लिये मंदिर द्वार की चन्द्रशिलायुक्त देहरी तक सीढ़िया निर्मित हैं। मुख मण्डप में प्रवेश द्वार है। मंदिर की द्वारशाखाओं पर नदी देवियों का अंकन है। सिरदल में ललाट बिम्ब में गजलक्ष्मी अंकन हैं। इस मंदिर में उपलब्ध भित्तियों कि उॅचाई 10 फिट है। इसमें शिखर अथवा छत का अभाव है। इस मंदिर स्थली से हिन्दू मत के विभिन्न देवी–देवताओं, व्यन्तर देवता, पशु, पौराणिक आकृतियां, पुष्पांकन एवं विविध ज्यामितिक एवं अज्यामितिक प्रतीकों के अंकन युक्त प्रतिमायें एवं वस्तुखण्ड प्राप्त हुए हैं। उनमें से रूद्रशिव के नाम सम्बोधित की जाने वाली एक प्रतिमा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह विशाल एकाश्मक द्विभुजी प्रतिमा समभंगमुद्रा में खड़ी है तथा उसकी उॅचाई 2. 70 मीटर है। यह प्रतिमा शास्त्र के लक्षणों के दृष्टि से विलक्षण प्रतिमा है। इसमें मानव अंग के रूप में अनेक पशु, मानव अथवा देवमुख एवं सिंह मुख बनाये गये है। इसके सिर पर जटामुकुट(पगड़ी) जोड़ा सर्पो से निर्मित है । ऐसा प्रतित होता है कि यहां के कलाकार को सर्प–आभूषण बहुत प्रिय था क्योंकि रूद्रशिव का कटि, हाथ एवं अंगुलियों को सर्प की भांति आकार दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रतिमा के उपरी भाग पर दोनों ओर एक–एक सर्पफण छत्र कन्धों के उपर प्रदर्शित है । इसी तरह बांये पैर से लिपटे हुए, फणयुक्त सर्प का अंकन है। दूसरे जीव–जन्तओं में मोर से कान का कुन्डल, आखों की भौहें एवं नाक छिपकली से, मुख की ठुड्डी केकड़ा से निर्मित है। तथा भूजायें मकरमुख से निकली हैं। सात मानव अथवा देवमुख शरीर के विभिन्न अंगो से निर्मित है।उपर बतलायें अनुसार अद्वितीय होने के कारण विद्वानों के बीच

Scanned by CamScanner

इस प्रतिमा की सही पहचान को लेकर अभी भी विवाद बना हुआ है। शिव के किसी भी ज्ञात स्वरूप के शास्त्रोक्त प्रतिमा लक्षण पूर्ण रूप से न मिलने के कारण इसें शिव के किसी स्वरूप विशेष की प्रतिमा के रूप में अभिराम सर्वमान्य नहीं है। निर्माण शैली के आधार पर ताला के पुरावशेषों को छठीं शतीं ईस्वी के पूर्वावशेषों कों छठीं शती ईस्वीं के पूर्वाध्द में रखा जा सकता है।

चित्रः— 1.1 रूद्रशिव

चित्र 1. 2 देवरानी मंदिर

(ख) जेठानी मंदिर :—दक्षिणाभिमुखी यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। भागनावशेष के रूप में ज्ञात संरचना उत्खनन से अनावृत किया गया है। किन्तुं कोई भी इसें देखकर इसकी भू—निर्माण योजना के विषय में जान सकता हैं । सामने इसके गर्भगृह एवं मंण्डप है जिसमें पहुॅचने के लियें दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम दिशा से प्रविष्ट होते थे। मंदिर का प्रमुख प्रवेश द्वार चौढ़ी सीढ़ीयों से संम्बध्द था । इसके चारों ओर बड़ें एवं मोटें स्तंभों की यष्टियां बिखरी पड़ी हुई हैं और यें अनेक प्रतिको के अंकनयुक्त है। स्तभं के नीचले भाग पर कुम्भ बने हुए है । स्तभों के उपरी भाग पर कुंम्भ आमलक घट पर दर्शाया गया है जो कि किर्तीमुख से निकली हुई लतावल्लरी से अलंकृत है। मंदिर का गर्भगृह वाला भाग बहुत अधिक क्षतिग्रत है और मंदिर के उपरी भाग का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। दिग्पाल देवता या गजमुख चबूतरे पर निर्मित कियें गये है। निस्सन्देह ताला स्थित स्मारकों के अवशेष भारतीय स्थापत्यकला के विलक्षण उदाहरण हैं। छत्तीसगढ़ के स्थापत्य कला की मौलिकता इसके पाषाण खंड में जीवित हो उठी है।

Scanned by CamScanner

विशेष टीपः— संत शिरोमणी गुरू रविदास शासकीय महाविद्यालय—सरगॉव, जिला—मुंगेली अपने ऑचल में ताला एवं मदकू द्वीप जैसे पुरा—महत्व के स्थलों को समेटे हुए है। इसलिये महाविद्यालय अपने 'मोनो' में ताला के शिवरूद्र एवं मदकू द्वीप के मंदिरों को अंगीकार कियें हुये है। महाविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों ने ऐतिहासिक महत्व के विरासत एवं धरोहर को सहेजने का पुनित कार्य किया है। लगभग चार महिने के अंतराल पर कुछ छात्र एवं शिक्षक इन ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण करते हैं, एवं वहॉ स्वच्छता अभियान चलाते हैं, परिसर की साफ— सफाई करते है, आगन्तुक पर्यटकों को इन ऐतिहासिक स्थलों के बारें में सम्पूर्ण जानकारी देतें हैं, एवं वहॉ के स्थानीय नागरिकों को इन ऐतिहासिक महत्व के धरोहरों को महफूज रखने हेतु प्रेरित करतें हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के अनेक शिविरार्थी की इन स्थलों पर एक या दो दिवसीय शिविर का आयोजन करतें हैं, वहॉ के स्थानीय लोगों को इन स्थलों के परिसर में धूम्रपान करने से मना करते हैं, एवं उन्हें ईश्वर की उपासना हेतु प्रेरित करतें हैं, एवं भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सम्यक ज्ञान प्रदान करतें हैं।

छात्र—छात्राओं एवं आम लोगों के बीच अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना महाविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ कार्य है। राष्ट्रीय सेवा योजना के अनेक शिविरार्थी एवं यूथ रेड कॉस हेतु कार्य करने वाले अनेक छात्र इन ऐतिहासिक स्थलों पर आम लोगों को अपनें स्वास्थ के प्रति जागरूक होने हेतु प्रेरित करतें हैं, स्वस्थ शरीर एवं स्वच्छ आत्मा का निर्माण करने हेतु प्रेरित करतें हैं, एवं विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के द्वारा आम लोगों को स्वास्थय लाभ प्रदान करतें हैं

08/3/21

Principal
Sant Shiromani Guru Ravidas
Govt. College, Sargaon
Distt. Mungeli (C.G.)

8/03/21
(डॉ. ए. के. चन्देल)

Scanned by CamScanner